International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 18-10-2020; Accepted: 03-11-2020; Published: 24-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 50-53

अमीर देश के गरीब जनः एक जनवादी नज़रिया

Manu
Professor, See Sankaracharya University, Kalady, Kerala, India

सारांश
सब साहित्यकार जनवादी है। मगर सब को हम जनवादी नाम से पुकार नहीं पायेंगे। क्योंकि इंसान के भीतर कई तरह गुण अवगुण मौजूद है। इन गुण अवगुण के मुताबिक मनुष्य में आदत का सृजन होता है। वैसे ही कोई हिंसक बन जाता हैए कोई शोषक बन है। आर्थिक कमी के कारण कई लोग औरों का शिकार बन जाता है। क ही समाज में रहकर किसी को रोटीए कपडाए मकान नहीं मिल जाता है तो कई लोग कई तरह की सुविधाओं के साथ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते है। जनवाद उन शोषित लोगों की हिमायती का आदर्श हैए लगे भूखे किसान व मज़दूरों का चेहरा है। अरुण कमल हिंदी साहित्य के मैदान में उन दुःख दर्द खानेवाले लोगों के साथ हैए इनमें आदिवासी लोग भी शामिल है । इन्हें छोड़कर उनके साहित्य का कोई हैसियत नहीं है। उनकी कविताओं के मरकज़ में आम आदमी खड़ा है। कविताओं के ज़रिये वे इन्हीं लोगों की हक़ केलिए निरंतर लड़ते रहते हैं। अरुण कमल की कविताएं सर्वहारा जन के रोज . रोज भोगे जाते दर्द व उलझनों का उन्हीं की ज़बान में मार्मिक बयान हैं । वे सामाजिक और राजनीतिक उथल.पुथल के बीच भी अपने घर . गांवए खेत . खलिहान ए पेड़ . पौधेए हाट . बाजार ए पशु . पक्षी आदि को नहीं भूलते हैं । उनका पहला काव्य संग्रह ष्अपनी केवल धारष् में उन्होंने आम आदमी की मुश्किलातोंए परेशानियोंए दर्दों को बखूबी साथ बयान किया है।

मूल शब्दः जनवाद, अरुण कमल, अपनी केवल धार, आदिवासी, शोषक

प्रस्तावना
'जनवाद' आज सारी दुनिया के किसी भी साहित्य केलिए अजनबी नहीं है। जनवाद में जन की अहमियत है । जन के बिना लिखना नामुमकिन है । लेकिन सवाल यह है कि जनवाद में जिक्र किये जाने वाले लोग किस तबके के होते हैं ? जनवाद ज़िन्दगी और वक्त से जुड़ा रहकर अपने ख़ास मक़सद को फैलाना चाहता है । यह मुट्ठी भर के शोषक–शासक तबके के लोगों को चेतावनी देता है कि हमें भी इस समाज में सबके जैसे जीने का हक़ है । शोषित तबके की समस्याओं को खूब गहरे व संजीदगी तौर पर बयान करने में जनवादी साहित्यकार कामयाब हुआ है । शोषित जन दल की रिहाई का नारा लेकर जनवाद मील का पत्थर बनकर साहित्य के मैदान में खड़ा है।

जनवाद मार्क्सवाद का विकसित रूप माना जाता है । लेकिन यह पुरतौर पर सही नहीं है । क्योंकि जनवाद राजनैतिक दायरे से दूर है। मगर मार्क्सवाद की सारी खासियत उसमें मौजूद है । इसलिए सारे के सारे मार्क्सवादी कलाकार जनवादी भी है। लेकिन सभी जनवादी कलाकार मार्क्सवादी नहीं है। कोश में कहा गया है कि – "कला और साहित्य में जनवाद जिस अर्थ में प्रयुक्त होता है, उसके पीछे एक विशिष्ट दर्शन है। मार्क्स ने समाज और उसके विविध रूपों और विचारों की ऐतिहासिक व्याख्या की है, वे कला और साहित्य पर भी लागू होती है। साहित्य की जो मार्क्सवादी विवेचना हुई, उसी से जनवाद का प्रादुर्भाव है ।" (1) जनवाद एक स्वतंत्र चेतना है, साथ ही साथ सामाजिक व आर्थिक आज़ादी की भी आवाज़ है । यह मनुष्य को सचमुच मनुष्य के रूप में देखना चाहता है। एक ओर यह नितांत होने वाले शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाता है तो दूसरी ओर ज़िंदगी की खूबसूरती , सहनशीलता., संघर्षभरता आदि को ऐतिहासिक, राजनैतिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि में समग्रता से देखने की संकल्पना भी करता है । जनवाद एक क्रान्तिधर्मी चेतना है, जो सामंतवाद, पूंजीवाद, साम्राज्यवाद एवं फरेब समाजवाद के ख़िलाफ़ भी लड़ता है। इसकी मूल प्रकृति में वामपंथी वर्ग चेतना मौजूद है।

जनवादी साहित्य का स्वरूप व्यापक है । अरुण लोखडे के अनुसार "जन साहित्य या जनवादी साहित्य उसीको कहा जाना चाहिए जिसमें बहुसंख्यक मज़दूरों और निम्न मध्यवर्ग के लोगों की समस्याओं का चित्रण किया गया है ।" (2) किसानों, मज़दूरों, दलितों, कमज़ोरों व निम्न मध्य वर्ग के सच्चे जीवन को कच्चे ढंग से सच्ची ज़बान में जनवादी साहित्य इज़हार कर देता है । जन साहित्य में सरहद्हीन जागरण की ताक़त मौजूद हैं । अवाम को निज़ाम के शोषण व दमन से सचेत करके क्रान्ति की ओर बढ़ाना जनवादी साहित्य का फ़र्ज़ है । कुंवरपाल लिखते हैं कि " जनवादी साहित्य का प्रमुख लक्ष्य होता है कि जनता को शिक्षित करना उनके संघर्षों और जीवन को स्वर प्रदानकर उन्हें आगे बढ़ाने में जनवादी साहित्य प्रेरणा देता है । " (3) वर्तमान समय में उस संपूर्ण साहित्य को जनवादी साहित्य कहा जाता है, जिसके अंतर्गत सामंती अवधारणाओं साम्राज्यवादी मूल्यों और पूंजीवाद का विरोध किया जाता है । मेरी नज़र में जनवादी या जम्हूरी साहित्य जन विरोधी सभी बातों के खिलाफ की आखिरी लड़ाई है । यह सत्ता के भीतर और बाहर के अंधेरों को हटाने का मशाल है। जनवाद सभी तरह के अंधेरों के खिलाफ के साहित्य का मशाल है । यह मशाल तभी बुझ जाएगा जब समाज से शोषण व जनविरोधी मुद्दे ख़त्म हो जायें । दर असल यह शोषित तबके का साहित्य है , इसमें कोई शक नहीं । .भरतसिंह, मुक्तिबोध, डॉ. नामवरसिंह, देवेशठाकुर आदि ने जनवाद को अपने अपने ढंग से पारिभाषित करने की कोशिश की है।

निज़ाम की भट्टी में जलता हुआ आम आदमी हर दिन गुज़ारने केलिए संघर्ष करता रहता है । .दिन के बढ़ने के साथ साथ उनकी समस्याएं भी बढ़ती जाती हैं । जनवादी साहित्य के मरकज़ में यही आम आदमी है, जो नंगा है, भूखा है, अर्थ से दूर है । सामंतवादी, पूंजीवादी, साम्राज्यवादी आदि सारे निज़ामों ने इसी आम आदमी का खून चूस कर मोटा तगड़ा बन गया है । जनवादी साहित्य इसी आम आदमी के सोज़ दर्द को सच्ची ज़बान में बड़े कानवास पर इज़हार कर देता है । सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी व्यंग्य करने में भी यह कहीं पीछे नहीं है।

जनवाद वैज्ञानिक चेतना पर ज़्यादा भरोसा रखता है। अर्थ बड़े बड़े लोगों के पास जम जाता है, समाज में समता का नमोनिशान तक है ।

सरमायेदार के पास सिर्फ़ अपना मुनाफा बढ़ाने का फिक्र ही रहेगा, जन का हर तरह का शोषण ही उसकी मानसिकता है। शोषण के निज़ाम को बरकरार रखने केलिए रोज़ नए–नए काले कानूनों के ज़रिए जम्हूरों के हक़ों में कटौती, और इन्साफ़ केलिए आवाज़ उठाने वालों का बर्बरता से दमन, आदि करतूतें की जाती हैं । जनवादी रचनाकार इनके द्रष्टा और भोक्ता भी है । नागार्जुन, शमशेर बहादुरसिंह, केदारनाथ अग्रवाल, गजानन माधव मुक्तिबोध, त्रिलोचन शास्त्री, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, धूमिल, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, उदयप्रकाश, चंद्रकांत देवताले, शील संजीव सक्सेना, नरेंद्र मोहन, राजेश जोशी, मंगलेश डबराल, मनोज सोनकर, पारस नाथ सिंह, कुमार विकल, गिरिजा कुमार माथुर, अरुण कमल आदि हिंदी के मशहूर जनवादी कवि के फेहरिस्त में आनेवाले हैं. ।

अरुण कमल समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं । कविता उनके लिए ज़िन्दगी है । वे सर्वहारा जन के नुमाईन्दा फनकार व कवि हैं । कवि पहले और बाद में आलोचक होता है। इसलिए अरुण जी को एक साथ कवि और आलोचक मान सकते हैं । उनकी शख्सियत आवाम लोगों पर पुर भरोसा रखती है। अरुण कमल का जन्म नासरीगंज रोहतास में सोन नदी के किनारे के ब्राह्मण परिवार में हुआ था । मगर उनकी आस्था की बुनियाद अवामों पर टिकी हुई है । घर की फ़िज़ा किताबों की खुशबू से भरी हुई थी। इसलिए बचपन ही वे साहित्य की ओर कशिश हो गए।

उर्दू ज़ुबान से मुहब्बत होने की बात याद करते हुए वे कहते हैं – " जीवन के पहले स्कूल की याद है मुझे वह एक मकतब था और एक मौलवी साहब बच्चों को टाट पर बिठाकर पढ़ाया करते थे । वहां की प्रार्थना की पहली पंक्ति मुझे अब तक याद है रामजी जो चाहे तो क्या नहीं होता, बहती है गंगा लगा लो जी गोता । यह प्रार्थना फिर कभी सुनने या देखने को नहीं मिली तो वही मैं भी बिठाया गया । जाहिर है उर्दू की सोहबत वहीं हुई । " (4) अरुण कुमार उपाध्याय नाम साहित्यिक माहौल में अरुण कमल में तब्दील होन`का श्रेय उनके पिता को है । अरुण कमल के शब्दों में " सन् 1969 में, जब मैं पटना में पढ़ता था तो छात्रावास में अरुण नाम के कई छात्र होने के कारण पत्र मिलने में बड़ी कठिनाई होती थी तब बाबूजी ने ही मेरा नाम अरुण कमल रख दिया । मेरा यह नाम मेरे बाबूजी का ही दिया हुआ है । " (5)

समाज ज़िन्दगी का सबसे बड़ा मैदान है। हमारे चारों तरफ कई घटनाएँ हर लम्हा होती रहती है । सब ये बातें देखते हैं । लेकिन इन घटनाओं का असर आम से ज़्यादा ख़ास पर पड़ता है । यह ख़ास ही कवि है, फनकार है । कवि खासियतों से भरपूर है । अरुण कमल के अब तक पाँच काव्य संग्रह उजाले में आ चुके हैं। 'अपनी केवल धार '(1980), ' सबूत ' (1989), ' नए इलाके में ' (1996), ' पुतली में संसार ' (2004), ' मैं वो शंख महाशंख ' (2012), आदि। अरुण कमल की नज़्मों में अवाम मरकज़ में है और सर्वहारा जन के दर्दों और लाचारी को आवाज़ मिली है । "अरुण कमल की ये कवितायें जीवन के प्रति गहरी लालसा की कविताएं हैं । कवि ने अपने आसपास की दुनिया को बहुत प्रेम और विश्वास के साथ इन कविताओं में उतारा है । अपनी सहजता , ऐन्दिकता और आकुलता केलिए ये कविताएं एक स्वर से सराही गई । अरुण कमल का ही शब्द लेकर कहें तो ये खिच्चा कविताएं है ।" (6)

अरुण कमल की ज्यातातर कविताएं नितांत वैयक्तिक और न ही पुर सामाजिक है, बल्कि वैयक्तिकता और सामाजिकता का खूबसूरत हमआहंगी या समन्वय उनकी नज़्मों में मौजूद है । उनकी कविता का विषय निम्न तबके की रोज़मर्रा ज़िन्दगी है । कविता में पशे उनके करबोतरब का सच्चा हमसफ़र हैं । ये करबोतरब कविता के फलक में खींचे गए हैं । अरुण कमल की कविताएं सर्वहारा जन के रोज – रोज भोगे जाते दर्द व उलझनों का उन्हीं की ज़बान में मार्मिक बयान है । वे सामाजिक और राजनीतिक उथल–पुथल के बीच भी अपने घर – गांव, खेत – खलिहान , पेड़ – पौधे, हाट – बाजार , पशु – पक्षी आदि को नहीं भूलते हैं।

सन् 1980 में प्रकाशित 'अपनी केवल धार ' अरुण कमल जी का प्रथम काव्य संग्रह है। इस संग्रह की कुल चाउवन नज़्मों में कवि ने अपनी सोचोनज़र की झलक का परिचय दिया है । 'अपनी केवल धार ' की सभी कविताएं अलग अलग किस्म की कविताएं हैं । पर हर कविता में किसी न किसी तरह से आदमी मौजूद है । उनकी त्रासदी का बयान भी हुआ है । 'अपनी केवल धार ', की कविताएं इस बात की सबूत है कि चालीस सनों के बाद भी कवि ने जो कुछ कहा है वह आज भी अनवरत रूप से चलता है । इस देश में प्रजातंत्र की आड में पूंजीवादियों, सरमायेदारों व ज़मींदारों ने आम आदमी का शोषण किया है आज भी कर रहे हैं और भी करेंगे भी । अवाम सर ए राह पर खाने केलिए हाथ फैलाता है। आम आदमी रोटी केलिए तरस रहा है। पूंजीवादी उनका शोषण कर रहे हैं ।

"मंदिर के बाहर खड़े हैं भी खमंगे / भूखे नंगे बच्चे । " (7)

मनुष्य के खिलाफ काम करने वाली ताकतों के ख़िलाफ़ उनकी कविताओं में सख्त नफरत भरी हुई होती है । वे उनपर तीखा व्यंग्य करते हैं। उनका यह व्यंग्य गहरे सोज़ोदर्द से जन्मा है । यह सोजोदार्द आजादी के पहले भी थे और आज़ादी के बाद भी। इससे अभी तक रिहाई ना मिली है । शोषित, पीड़ित, मेहनतकश जिंदगी की दस्तावेज़ की मिसाल हैं 'यात्रा', 'होटल ', 'खबर ', 'धरतीऔरभार ', ' मसोमाज्योतिर्गमय ', 'सूर्यग्रहण' और 'बेचारी कुबड़ी बुढ़िया', 'मुक्ति', 'दरजिन', 'युद्धक्षेत्र' आदि कवितायेँ । आम आदमी की जिंदगी के बीच घूमने के बावजूद भी ' सौंदर्य ', 'जिद्दीलतर ' आदि कवितायेँ फितरत से कवि का जो लगाव है उसे दर्शाती है ।

'अपनी केवल धार' एक ओर जमीन से जुड़े, खेती पर निर्भर करने वाले मज़दूरों का बयान है तो दूसरी तरफ खुद जिस्मी मेहनत से दूर रहकर श्रम से उपजे अन्न, जल का इस्तेमाल करनेवाले अमीर किसान व पढे लिखे दिमागी तबके के लोगों का भी बयान है ।

अरुण कमल की सब से बड़ी खासियत आदमी से मुहब्बत करने की ताक़त करते हैं । वे लिखते हैं

" जो आदमी को प्यार नहीं करते उनकी कोई गंगा नहीं कोई मातृभूमि नहीं कोई अपना तारा नहीं ।"(8)

इसलिए आदमी के खिलाफ होनवाले किसी भी जुल्म को वे सबर नहीं कर पाते हैं ।

अपनी कविताओं में कवि कहीं सदियों से शोषित औरत का जिक्र करते हैं तो कहीं खोया हुआ बचपन ढूंढते नंग – धड़ंग बच्चों की दर्दभरी तस्वीर भी खींचते हैं । एक ओर भूख के लगातार हमले की वजह सड़क पर दम तोड़ते गरीब की तस्वीर है तो दूसरी ओर रोजमर्रा की जरूरतों केलिए लड़ते अवामों की हयात की तस्वीर है । वे 'धार' कविता में खुद यह स्वीकार करते हैं कि मेहनतकश आम लोग ही उनका काव्य विषय है जिसे उन्होंने अपने फन के ज़रिये यूं ही प्रस्तुत किया है

"अपना क्या है इस जीवन में सब तो लिया उधार
सारा लोहा उन लोगों का
अपनी केवल धार ।" (9)

इस तरह अरुण कमल ने पहले ही संग्रह से अपने जन कवि होने का परिचय दिया है।

उनके पहले संग्रह की पहली कविता 'जाना' बहुत ही सरल व सीधे सादे लफ़्ज़ों से बुनाई गई है और कविता धरती – आकाश के बीच बसे ज़िंदा , जीवनानुभवों, घटनाओं तथा प्रसंगों को खूबसूरत तौर तरीके से अभिव्यक्त करती है । प्रकृति के हर रंग, स्वाद व बू के साथ अपने सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक परिदृश्य की बेबाक अभिव्यक्ति उनकी कविता में मौजूद है। वे लिखते हैं

" पर डाल पर पकते इस फल को तभी जाना है असली रंग–स्वाद–गंध इस छोटे से फल के धरती आकाश तक फैले संबंध ।" (10)

एक छोटे से फल के ज़रिए पृथ्वी और आकाश तक फैले संबंध को ज्ञात करना ही कवि का अहम मक़सद है । फूल से फल बनने की प्रक्रिया को जब कवि आत्मानुभूत करता है, तब उसे जीवन की हक़ीकती इल्म की याद आती है ।

कवि ने अपने सामाजिक माहौल से हसिलशुदा तजुर्बों को अपनी कविताओं का विषय बनाया है। रोज़मर्रा ज़िन्दगी से मिले हर चीज़ की अभिव्यक्ति उनकी कविताओं में शामिल हुई है । इसलिए अरुण कमल की कविताएँ जन चेतना का वाहक है ।

' यात्रा ' नामक कविता का मरकज़ संघर्षरत आम आदमी है । यह कविता किसानों के दर्द की दास्तान है। निहाल सिंह दर्दखाने वाले किसानों की ज़िन्दगी को इज़हार करनेवाला नुमाइंदा किरदार है। किसान से बहेतर है मज़दूरों की हाल शायद इस सोच से वह अपनी जमीन व गांव छोड़कर दूर एक दूसरे शहर में मजदूर की ज़िन्दगी जीने केलिए विवश हो जाता है । निहाल सिंह रोजी – रोटी की तलाश में अपना मुल्क (पंजाब) छोड़कर कलकत्ता के जूट के मिल में काम करने निकल जाता है । उसकी अपनी ज़मीन से बिछुड़ने का दर्द , कवि ने बड़ी मार्मिकता व सजगता से खींच लिया है । पंजाब की धरती का छोड़ना पश्चिम बंगाल की तरफ जाना एक अजीब बात सी लगती है, तब निहाल सिंह अपनी हालत को बयान करते हुए कहता है

" कौन नहीं चाहता जहाँ जिस जमीन उगे / मिट्टी बन जाय वहीं , पर दो मट नहीं , तपता हुआ रेत ही है घर / तरबूज का, जहां निभे जिंदगी वही घर वही गांव ।" (11)

कवि का कहना सौ फ़ीसदी सही है कि आज वतन के आम मेहनतकश आदमी की हालत इतनी बदतर है कि रोजी – रोटी केलिए उसे अपना घर घरोंदा, अपनी जमीन, खेती अपना मुल्क छोड़कर किसी पराये मुल्क में रहना पड़ रहा है । सिर्फ अपने परिवार की परवरीश के सोच विचार में । आज के आम आदमी की इस त्रासदी को ही अरुण कमल ने इस कविता में अभिव्यक्त किया है।

पूंजीपतियों व सरमायेदारों के मिलों , कारखानों में काम करनेवाले यह आम आदमी हर पल अनिश्चितता तथा असुरक्षा में जीवन बसर करता है। यह निज़ाम उसका तमाम श्रम चूस लेता है और इतना ही नहीं जब वह कमज़ोर हो जाता है तब उसे किसी भी वक़्त बेवजह काम से बेदखल कर देता है । किसी भी जरूरत पर मज़दूर दो–तीन दिन की छुट्टी ले ले तो उसे डर सताता है कि कहीं उसे मालिक काम से बेदखलन किया जाए. । आम मज़दूर के इस तनाव को अरुण कमल ने यूँ शब्दबंद किया है कि " कोई नहीं जानता बंद हो जाएँगी कौन – सी मिलें किनकी होगी छँटनी, किनकी कटेंगी की तनखाहें। सब रह गए थे घर पर दो – एक दिन फाज़िल।"(***12***)

आगे अरुण कमल ने अपनी नज़्म 'ओह बेचारी कुबड़ी बुढ़िया ' में एक आम औरत की दर्दनाक ज़िंदगी की अभिव्यक्ति की है । हम ऐसे समय में जिंदगी गुजार रहे हैं जब देश तरक्की की दौड़ में बहुत आगे आगे बढ़ गया है। लेकिन वतन की तरक्की के साथ आम आदमी की तरक्की नहीं हो पा रही है। आम आदमी की जो तरक्की है वह सुनहरे लफ़्ज़ों में कागज़ों पर रचा गया है। समाज में फैले बेबराबरी की वजह उसे हमेशा कसर, दर्द व गुरबत में जीना पड़ता है। कुबड़ी बुढ़िया को अपने घर पर बैठ कर पोते पोतियों को कहानियां सुनाने की उमर में मालिक के घर जाकर बर्तन मांजना पड़ताहै । मालिक के जुल्म भरे मिज़ाज का पात्र भी बनना पड़ता है। ऐसे काम करते करते संघर्ष भरे जीवन को ढोते ढोते सब सबर करते हुए एक दिन वह दुनिया से हमेशा केलिए चली जाती है ।

"मालिक के घर गयी और बर्तन भीमाँजा मालकीनी को तेल लगाया मालिक ने डाँटा भी शायद घर आयी फिर चूल्हा जोड़ा. " (***13***)

अरुण कमल मानते हैं कि कौम , मज़हब और भाषा के बीच का संघर्ष अमन और जम्हूरियत केलिए ज़रूर ही ख़तरा है। आज हमारा तमाम वतन इस संघर्ष का मैदान बन गया है । यहां दंगे फसाद, मारपीट और आगजनी की कोई कसर नहीं है। जातीय संघर्ष को कवि सबर नहीं कर पाते हैं । दंगे फसाद में मारे गए लोगों की लाशों को देखकर यह बताना मुश्किल है कि वे कि किन जातियों के लोग हैं ? मगर वर्तमान हालत का परिचय ' युद्धक्षेत्र' नामक नज़्म के जरिए कवि ने यूँ स्पष्ट किया है ।

-

"मारे गए दस जन
यदुवंशी थे ? बामन थे ? छत्री थे ? नहीं मालूम मारे गए दस जन।" (***14***)

अरुण कमल ने कुबड़ी बुढ़िया के जरिए जो कुछ बताना चाहा है , वही बात बच्चों के जरिए 'होटल' कविता में कहने की कोशिश की है। खेलने कूदने की उम्र में बच्चों को सरे राह मुँहताज बनना पड़ता है । किसी ना किसी होटलों व दुकानों में मजदूरी करना पड़ता है। होटल में काम करने वाला बच्चा ग्राहकों को खाना तो परोस देता है मगर खुद भूखा है और भूख के मारे किवाड़ के पीछे खड़ा होकर परोसी हुई थाली की ओर देखकर रोता है । अरुण कमल ने दिल तोड़ने वाले दृश्य को यौं शब्दों में पिरो दिया है ।

"जैसी ही कौर उठाया हाथ रुक गया। सामने किवाड़ से लगकर रो रहा था वह लडका जिसने मेरे सामने रखी थी थाली।" (***15***)

'अपनी केवल धार' की सबसे अहम व व्यंग्यपूर्ण रचना ' तमासो मा ज्योतिर्गमय' है । यह राजनीतिक व्यग्यों से भरपूर है । लोगों की बुनियादी समस्याओं की ओर आँख मूंदकर या अनदेखा करके अपनी सत्ता को बरक़रार रखने केलिए सत्ताधारी कुछ खोखली योजनाओं की उद्घोषणा चुनाव के वक्त करते हैं । वक्त वक्त पर सरकार द्वारा की जाने वाली खोखली नीति पर कवि ने तीखा व्यग्य किया है । हजारों साल गुजर गए । अब भी आदिवासी के घर घरौंदों में बिजली की सहूलियत नहीं है । तालीम व इल्म से दूर रहने की वजह आदिवासी अपनी हक सही तौर पर समझ नहीं पा रहे है । ना चाहती है तो उन्हें बिजली, तार , खंभे, ट्यूब और बल्ब देने के बदले तालीम दे । कवि के लफ़्ज़ों में

"उन्हें रोशनी नहीं चाहिए बिजली के तार और खंभे ट्यूब और बल्ब नहीं नहीं चाहिए." (***16***)

'धार' दिमाग को झकझोर करेवाली कविता है। कवि जन के हिमायती है, जन से बढ़कर उनके सामने कुछ भी नहीं है। सब मेहनतकश लोगों के पसीने से उपजी चीजें हैं। चिलचिलती धूप औ सख्त बारिश में जीकर किसान फसलें उगाता है, कारीगर कपड़े बुनता है, मज़दूरों का पसीना हर घर की तामीर में रहता है, अपना कुछ भी नहीं होता है। कवि के फिकरों के मुताबिक

"अपना क्या है इस जीवन में सब तो लिया उधार सारा लोहा उन लोगों का अपनी केवल धार ।" (*17*)

अपने दुख दर्दों में भी देश की बुनियादी ताकतें किसान–मज़दूर कर्ज का बड़ा बोझ ढोते हुए भी आशावादी हैं । इसलिए ही वतन चलता है, इन्हीं के बिना हम किसी भी वतन का ख्वाब नहीं देख पाएंगे । किसानों और मजदूरों के बिना वतन की ज़िंदगी गुज़र नहीं जायेगी । वे बुनियाद हैं, बुनियाद को हाशिए पर छोड़कर कैसे देश तरक्की पायेगा ? अमीर देश के गरीब जन किसी को भी, कभी भी अच्छा नहीं लगता।

संदर्भ सूची

1 डॉ. प्राची शर्मा : अरूण कमल एवं समकालीन हिन्दी कविता, पृ. 57
2 वही :पृ. 58
3 वही :पृ. 63
4 अरूण कमल :अपनी केवल धार, पृष्ठ संख्या 47
5 अरूणकमल :सबूत, पृष्ठसंख्या 40
6 डॉ. प्राची शर्मा :अरुण कमल एवं समकालीन हिन्दी कविता, पृ. 69 7 अरुणकमल :पुतलीमेंसंसार, पृ. 30
7 अरुणकमल :अपनी केवल धार , पृ. 64
8 वहीः पृ. 88
9 वहीः पृ. 11
10 वहीः पृ. 13
11 वहीः पृ. 13
12 वहीः पृ. 30
13 वहीः पृ. 33
14 वहीः पृ. 16
15 वहीः पृ. 25
16 वहीः पृ. 88